UP Board Notes for Class 9 Hindi Chapter 6
जयशंकर प्रसाद (काव्य-खण्ड)

(पुनर्मिलन)

1. चौंक उठी ..... मैं फेरा।
अथवा अरे बता दो मुझे ..... आकर कह दे रे!
शब्दार्थ- दूरागत = दूर से आयी। **निस्तब्ध** = शान्त, शब्दविहीन । **निशा** = रात्रि । **प्रवासी** = विदेश में गया हुआ।
सन्दर्भ- यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** के **'पुनर्मिलन'** कविता से लिया गया है। यह कविता जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य से संकलित है।
प्रसंग- प्रस्तुत पद्यावतरण में यह बताया गया है कि मनु श्रद्धा से रुष्ट होकर सारस्वत नगर चले गये। वहाँ वे संघर्षों में घायल हो गये। श्रद्धा ने उनकी इस स्थिति को स्वप्न में देखा और मनु को ढूंढ़ने निकल पड़ी। मनु को खोजती हुई यहाँ श्रद्धा का वर्णन किया गया है।
व्याख्या- श्रद्धा मनु को खोजती हुई जा रही है। रात का समय, एकान्त निर्जन वन, विचारों में डूबी वह चली जा रही है । इड़ा अपने विचारों में डूबी हुई बैठी है, अचानक दूर से आयी आवाज सुनकर वह चौंक पड़ी । इड़ा सोचने लगी, इस शान्त शब्दविहीन सुनसान रात्रि में यह इस प्रकार कहती कौन आ रही है ! आवाज इस प्रकार थी-"अरे मुझे कोई दया करके बता दो कि वह मेरा प्रवासी (विदेश में गया हुआ) प्रियतम कहाँ चला गया है? उसी पगले से मिलने के लिए मैं चक्कर काट रही हूँ।"
काव्यगत सौन्दर्य

1. **भाषा-** खड़ीबोली। **रस-** वियोग श्रृंगार। **गुण-** प्रसाद । **अलंकार-** रूपक, अनुप्रास।

2. रूठ गया था.....जलती।
शब्दार्थ- शूल = काँटा। **सदृश** = समान। **साल रही** = चुभ रही है। **उर** = छाती, मन । **राजपथ** = राजमार्ग, रास्ता । **वेदना** = पीड़ा।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित **'पुनर्मिलन'** से उद्धृत है।
प्रसंग- मनु श्रद्धा से रूठ गये थे। वह उन्हें खोजती हुई निकल पड़ी। श्रद्धा मनु के रूठने के विषय में बताती हुई कहती है –
व्याख्या- इड़ा ने दूर से आती हुई ध्वनि सुनी। यह ध्वनि श्रद्धा की थी। श्रद्धा कह रही थी कि मैं अपने बिछुड़े प्रियतम से मिलने के लिए ही फेरा लगा रही हैं। वह आगे कहती है- मेरा प्रियतम मनु मुझसे क्या रूठ गया था, मानो अपने-आपसे ही रूठ गया था। उसके रूठने का कारण यह था कि मैं उसे उस रूप में नहीं अपना सकी थी, जिस रूप में वह चाहता था। वह मुझ पर पूर्ण अधिकार चाहता था। मेरे मन में मेरी भावी सन्तति के प्रति पनपते प्रेम से उसे ऐसा लगा, जैसे वह उपेक्षित हो रहा हो और इसीलिए वह मुझे छोड़कर चला गया। उसमें और मुझमें कोई अन्तर तो था नहीं- यह सोचकर ही मैं रूठे हुए प्रियतम को मना भी नहीं सकी थी। भला कोई स्वयं को मनाता थोड़े ही है।

किन्तु वस्तुतः यह एक भूल ही हुई थी। मुझे उसे मनाना चाहिए था। मेरी वह भूल अब काँटे की तरह

मेरे मन में चुभ रही है। कोई मुझे यह तो बताये कि मैं उसे किस प्रकार पा सकती हूँ? पता नहीं वह कहाँ-कहाँ भटकता फिर रहा होगा।

काव्यगत सौन्दर्य

1. वातावरण की दृष्टि से उत्तम अभिव्यक्ति हुई है।
2. **भाषा-** खड़ीबोली, "उर को सालता' मुहावरा।
3. **गुण-** प्रसाद।
4. **रस-** विप्रलंभ श्रृंगार।
5. **शब्द-शक्ति-** अपनेपन से रूठना', 'धुंधली-सी छाया चलती', 'जलती' आदि लाक्षणिक प्रयोग है। अलंकार- रूपक, अनुप्रास।

3. इड़ा उठी.....घायल होकर लेटे।

शब्दार्थ- वसन = वस्त्र । **विशृंखले** = अस्त-व्यस्त। **कबरी** = चोटी । **छिन्न पत्र** = छिन्न-भिन्न (टूटे) पत्तेवाली । **मकरन्द** = पराग । **अवलम्ब** = सहारा । **वय** = उम्र । **बटोही** = पथिक।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **'पुनर्मिलन'** शीर्षक पाठ से अवतरित हैं।

प्रसंग- श्रद्धा ने अपने बिछडे पति मनु को स्वप्न में घायल और मरणासन्न अवस्था में देखा। वह पुत्र को साथ लेकर मनु को खोजने निकल पड़ती है और खोजते-खोजते इड़ा के पास पहुँचती है । इड़ी श्रद्धा की अस्त-व्यस्त दशा का चित्रण करती है।

व्याख्या- इड़ा ने जब उठकर देखा तो उसे राजपथ पर एक धुंधली-सी छाया आती दिखायी दी। उसके स्वर में करुण वेदना थी और उसकी पुकार दु:ख की आग में जलती हुई-सी प्रतीत हो रही थी। श्रद्धा का शरीर निरन्तर चलने के कारण थक गया था। उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त हो गये थे। उसकी चोटी खुल गयी थी, जो उसकी अधीरता को प्रकट कर रही थी। वह ऐसी मुरझाई कली के समान मालूम पड़ रही थी
जिसकी पंखुड़ियाँ टूटकर बिखर गयी हों, जिसका पराग लुट गया हो। श्रद्धा की अस्त-व्यस्तता उसकी मानसिक परेशानी को प्रकट कर रही थी, जिससे उसे अपने शरीर की सुध नहीं थी।

इड़ा कहती है कि उस स्त्री के साथ एक नवीन किशोर आयु का कोमल और सुन्दर बालक था। वह अपनी माँ की उँगली पकड़कर चल रहा था। वह शान्त और धैर्य की मूर्ति के समान था। वह अपनी माँ का एकमात्र आधार था और अपनी माँ को कसकर पकड़े हुए धीरे-धीरे चल रहा था। वे दोनों ही पथिक जो माँ-बेटे थे, अत्यन्त थके हुए और दु:खी लग रहे थे। वे दोनों उस भूले हुए मनु की खोज कर रहे थे जो घायल होकर लेटा हुआ था।

काव्यगत सौन्दर्य

1. प्रस्तुत पंक्तियों में मनु की खोज में श्रद्धा की अस्त-व्यस्त दशा का करुण चित्रण हुआ है।
2. पुत्र मानव को माँ श्रद्धा का एकमात्र सहारा बताया है; क्योंकि पति के बिछुड़ने पर पुत्र ही स्त्री का अवलम्ब कहा जाता है।
3. **भाषा-** साहित्यिक खड़ीबोली
4. **शैली-** चित्रात्मक।
5. **रस-** विप्रलम्भ श्रृंगार एवं केरुण।
6. **शब्द शक्ति-** लक्षणा ।
7. **गुण-** माधुर्य
8. **अलंकार-** अनुप्रास, उपमा।

https://www.evidyarthi.in/

4. इड़ा आज कुछ .....दुःख की रातें।
शब्दार्थ- द्रवित = दयालु । **बिसराया** = भुला दिया है। **रजनी** = रात । **व्यथा** = दु:ख।
सन्दर्भ- ये पंक्तियाँ **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **'कामायनी'** के 'पुनर्मिलन' शीर्षक से ली गयी हैं।
प्रसंग- इन पंक्तियों में इड़ा श्रद्धा की करुण दशा को देखकर पूछती है कि तुम्हें किसने भुला दिया है।
व्याख्या- इड़ा श्रद्धा की करुण वाणी को सुनकर उसके पास जाती है और उसका परिचय पूछते हुए यह प्रश्न करती है कि तुमको किसने भुला दिया है? तुम किसे यहाँ खोज रही हो? इस रात में तुम कहाँ भटकती फिरोगी? मेरे पास बैठकर थोड़ी देर विश्राम करो, आज मैं भी अत्यधिक व्यथित हूँ। तुम
अपने दु:ख को मुझे बताओ । यह जीवन एक लम्बी यात्रा के सदृश है जिसमें खोये हुए पुनः मिलते हैं। इस जीवन में मिलने और बिछुड़ने का क्रम दिन और रात के क्रम के समान चलता रहता है। दु:ख की रातें कितनी ही लम्बी हों पर समाप्त हो जाती हैं।
काव्यगत सौन्दर्य

1. भाग्यवादी विचारधारा का संकेत है।
2. भाषा शुद्ध एवं परिमार्जित है।
3. शैली लाक्षणिक तथा प्रसाद गुण दृष्टिगोचर हो रहा है।
4. अनुप्रास, उपमा, दृष्टान्त अलंकार है।

5. श्रद्धा रुकी.....क्यों रह जाती?
शब्दार्थ- श्रान्त = थका हुआ। **वह्नि-शिखा** = आग की लपटें । **वेदी-ज्वाला** = यज्ञवेदी की अग्नि । **अनुलेपन** = मरहम।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **'पुनर्मिलन'** से उधृत है।
प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियों में मूर्च्छित मनु को देखकर श्रद्धा के हृदय में उत्पन्न भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।
व्याख्या- इड़ा की सहानुभूतिपूर्ण बातों को सुनकर श्रद्धा वहीं रुक गयी। उसका बेटा भी बहुत थक गया था और वहाँ आश्रय भी मिल रहा था। श्रद्धा तब इड़ा के साथ उस स्थान की ओर चल दी, जहाँ पर आग की लपटें उठ रही थीं। सहसा यज्ञवेदी की अग्नि धधक उठी, जिससे मण्डप में प्रकाश फैल गया। श्रद्धा ने वहाँ कुछ देखा और कदम बढ़ाती हुई वहाँ तक जा पहुँची। उसने वहाँ मनु को घायल अवस्था में देखा। श्रद्धा सोचने लगी कि क्या मेरा स्वप्न सच्चा निकला? वह चीख उठी-"आह प्राणप्रिय ! यह क्या हो गया? तुम इस दशा में क्यों हो?" ऐसा कहते हुए उसका मन भर आया और उसके नेत्रों से आँसू बहने लगे। यह देखकर इड़ा चकित रह गयी। श्रद्धा अपने पति मनु के पास बैठकर उनके शरीर पर हाथ फेरने लगी। उसका वह स्पर्श मरहम के समान कोमल एवं कष्ट हरनेवाला था; तब मनु के हृदय में पीड़ा क्यों शेष रहती?
काव्यगत सौन्दर्य

1. यहाँ कवि ने श्रद्धा और मनु के मिलन का मार्मिक चित्रण किया है।
2. **भाषा-** साहित्यिक खड़ीबोली
3. **शैली-** चित्रात्मक।
4. **रस-** करुण।
5. **अलंकार-** 'घुला हृदय बन नीर बहा' में रूपक है।

6. उस मूर्च्छित नीरवता ..... लगते जी को? (Imp.)
शब्दार्थ- नीरवता = सूनापन, सन्नाटा। **स्पन्दन** = कम्पन।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **'पुनर्मिलन'** से उद्धृत है।।
प्रसंग- इन पद्य-पंक्तियों में प्रसादजी ने श्रद्धा और मनु के मिलने का मार्मिक चित्रण किया है।
व्याख्या- श्रद्धा अपने पति मनु को घायल और मूच्छित देखकर **'प्राणप्रिय'** कहकर उनके पास बैठ गयी और उनको सहलाने लगी। श्रद्धा का सुखद एवं मधुर स्पर्श पाकर शब्दहीन, चुपचाप मूच्छित पड़े मनु के शरीर में हल्की-सी हलचल उत्पन्न हो गयी। मनु ने आँखें खोलीं और एक-दूसरे को प्रेमपूर्वक देखते रहे, तब दोनों की आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे।

उधर श्रद्धा का पुत्र मानव यज्ञभूमि के ऊँचे मन्दिर, यज्ञ-मण्डप और यज्ञ की वेदी को देख रहा था, वह सोचने लगा कि यह सब कितना मोहक, सुन्दर और नवीन है, जो मेरे मन को आकर्षित कर रहा है।
काव्यगत सौन्दर्य

1. यहाँ कवि ने पतिपरायणा स्त्री के सहज प्रेम और सेवाभाव का चित्रण किया है।
2. प्रेम का मधुर स्पर्श शारीरिक पीड़ा को दूर कर देता है।
3. **भाषा-** साहित्यिक खड़ीबोली ।
4. **शैली-** भावात्मक, चित्रात्मक।
5. **रस-** शृंगार।
6. **छन्द-** माधुर्य ।।

7. माँ ने कहा ..... श्रद्धा का संगीत बना।
शब्दार्थ- रोएँ खड़े होना = रोमांचित होना। **सजीवता** = जीवन्तता।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित **'पुनर्मिलन'** शीर्षक से अवतरित है।
प्रसंग- इन पंक्तियों में श्रद्धा अपने पुत्र को मनु से मिलवाती है। सबके मिलन पर छोटे-से परिवार में आत्मीयता का भाव भर जाता है।
व्याख्या- मनु के होश में आने पर श्रद्धा ने अपने पुत्र से कहा कि तू भी आकर अपने पिता के दर्शन कर ले । ये भूमि पर लेटे हुए हैं – माँ का कथेनें:सुनते ही उसने पितोकेपीस"जोकर कहा-पंतीर्जी' ! देखों मैं आपके पास आ गया।" पिंतों से बँतकरं पुत्र को अति प्रसन्नत हुई । दनों हरिसँचित हो गये। पुत्र अपनी माँ (श्रद्धा) से बोला कि माताजी आप यहाँ बैठी क्या कर रही हो? पिताजी प्यासे होंगे, इन्हें जल लाकर दो। बालक की मधुर ध्वनि से मण्डप में ऐसी सजीवता छा गयी, जो पहले नहीं थी। | इस प्रकार उस घर में पुन: अपनेपन का भाव भर गया। श्रद्धा, मनु और कुमार के मिलने से वहाँ एक छोटा-सा परिवार बन गया। उस परिवार में श्रद्धों का मधुर स्वर संगीत बनकर छा गया।
काव्यंगत सौन्दर्य

1. प्रैस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा, कुमार और मनु के सुखद मिलन का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. **भाषा-** शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली
3. **शैली-** चित्रात्मक, संलाप।

https://www.evidyarthi.in/